बस्तर का “टाइगर बॉय” चेंदरु मंडावी

मोहन
शोध छात्र, जनजातीय अध्ययन विभाग
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय,अमरकंटक (मध्यप्रदेश)
मोबाईल- 8890112466, मेल- mohanmeena121s@gmail.com
रोज़ विला, नाथ गली,ज्योतिपुर, गौरेला, छत्तीसगढ़ 495119

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में गढ़ बेंगाल (बस्तर) के मुरिया आदिवासी समुदाय के बालक चेंदरू मंडावी की जीवनी का वर्णन किया गया है | यह कहानी आज से 70 वर्ष पहले बाघ से दोस्ती का पैगाम देने वाले अबूझमाड के जंगलों में रहने वाले चेंदरू ओर उसके दोस्त टेंबु बाघ की गहरी दोस्ती की है | चेंदरू पर स्वीडिश आस्कर विजेता सुप्रसिद्ध फिल्मकार डायरेक्टर अरने सक्सडोर्फ ने “द जंगल सागा” फिल्म भी निर्मित की थी | जिस फिल्म ने पूरे विश्व में धूम मचा दी | इसमे चेंदरू की भारत के बस्तर से स्वीडन तक की जीवन यात्रा व अपने जीवन के अंतिम समय में कष्टदायक गुमनामी के जीवन का भी वर्णन किया गया है | इसी गुमनामी के साथ वर्ष 2013 में इस महान कलाकार चेंदरू ने इस दुनिया को अलविदा कह दिया |

प्रस्तुत शोध पत्र में मुख्यत् द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है जो की अनेक पत्र, पत्रिकाओ ओर डाक्यूमेंटरी से लिए गए है | कुछ आकडे राज्य सरकार की आधिकारिक वेबसाईट से भी लिए गए है |

बीज शब्द : चेंदरू राम मंडावी, मुरिया आदिवासी समूह, टेंबु, अरने सक्सडोर्फ, द संगल सागा, घोंटूल |

बस्तर का “टाइगर बॉय” चेंदरु मंडावी

"यदि आप जानवरों से बात करते हैं, तो वे आपसे बात करेंगे, और आप एक दूसरे को जान पाएंगे। यदि आप उनसे बात नहीं करते हैं, तो आप उन्हें नहीं जान पाएंगे और जो आप नहीं जानते हैं, उससे आप डरेंगे। कोई क्या डरता है, एक नष्ट कर देता है।"

- चीफ़ डैन जॉर्ज, स्लीइल-वाउथुथ नेशन (George, 2022)

ऊपर लिखित उक्ति अमेरिका के एक आदिवासी कबीले के प्रमुख की है जो जंगल में निवास करने वाले जानवरों से उनके संबंधों को दर्शाती है | जंगल ओर उसमे निवास करने वाले वन्य जीवों का व आदिवासियों का संबंध हमेशा पारिवारिक संबंधों की तरह रहा है जिसका वर्णन हमे भारत की ऐतिहासिक कथाओ में भी ‘राजा दुष्यंत के पुत्र भरत का शेरो के साथ खेलना’ के रूप में पढ़ने को मिलता है | भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में यहां की एक बड़ी आदिवासी आबादी जो की कुल जनसंख्या का 2011 की जनगणना के अनुसार 8.6 प्रतिशत है, जो यहां की विविधता में चार चाँद लगा देती है | देश की आदिवासी आबादी का एक बड़ा हिस्सा मूलतः घने व सुदूर जंगलों

में निवास करता है | इन घने जंगलों में इन आदिवासी समूहों के शोर्य की वीर गाथा आज भी सुनाई देती है | यहां भी आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र बस्तर के अबूझमाड़ के घनघोर जंगलों में निवास करने वाले आदिवासी समुदाय के एक लड़के चेंदरू की जीवनी का वर्णन किया गया है | भरत का शेरो के साथ खेलने का जैसे ऊपर वर्णन किया है वैसे ही वास्तविकता में बस्तर का एक मुरिया आदिवासी लड़का भी बाघ व शेरो के साथ खेलता था | इस आदिवासी लड़के का पूरा नाम चेंदरू राम मंडावी था | चेंदरू बस्तर के गढ़ बेंगाल का रहने वाला था व मुरिया आदिवासी समुदाय से आता था | रसेल एवं हिरालाल के अनुसार 'मूर' शब्द से मुरिया बना है ओर मूर का अर्थ पलाश वृक्ष है बस्तर रियासत में पलाश वृक्ष की बहुलता रही है अतः इस वृक्ष की छाया में रहने के कारण मुरिया कहलाए | मुरिया आदिवासी समुदाय गोंड आदिवासी समुदाय की एक उपशाखा है व ये लोग गोंडी व हलबी भाषा बोलते है | वेरियर एलविन ने अपनी पुस्तक "दी मुरिया एण्ड दियर घोंटूल", (1947) मुरिया आदिवासी समुदाय पर लिखी है | मुरिया आदिवासी समुदाय भारत के 75 आदिम जनजाति समुदायों में से एक है |

जब चेंदरू 7-8 साल का छोटा बच्चा था तो उसके दादा जी ओर पिता जी जो पेशे से एक बड़े निपुण शिकारी थे, एक दिन जंगल से बांस की टोकरी में उसके लिए एक तोहफा लाए | इस टोकरी में छुपे हुए तोहफे को देखने के लिए चेंदरू बड़ा उत्साहित था | जब चेंदरू ने टोकरी को खोला तो उसके अंदर बाघ के नन्हे शावक को देख कर उसकी खुशी का ठिकाना ना रहा व उसने उस बाघ के शावक को गले से लगा लिया | यही से बाघ के नन्हे शावक की ओर चेंदरू की मित्रता आरंभ हो गई, जिसकी कहानी आगे की आने वाली पीढ़ियों को भी सुनाई गई | चेंदरू ने इस बाघ के शावक का नाम टेंबु रखा | समय के साथ- साथ चेंदरू ओर टेंबु की उम्र बढ़ती गई ओर वे दोनों बहुत घनिष्ट मित्र हो गए | दिनभर चेंदरू ओर टेंबु दोनों गाँव के दूसरे बच्चों के साथ खेलते थे | चेंदरू टेंबु को गाय व भैस का दूध पिलाता था | चेंदरू टेंबु को लेकर नदी में मछलियां पकड़ने जाता था, उन दिनों चेंदरू एक तीर में मछली का शिकार कर लेता था तब तक टेंबु नदी के ठंडे पानी में आराम फरमाता | कभी कभी चेंदरू की दोस्त भी टेंबु को नहलाती थी | इस दौरान जब जंगल में कभी तेंदुए मिल जाते तो वह भी इनके साथ खेलने लग जाते | चेंदरू ओर टेंबु की दोस्ती के किस्से व कहानिया सिर्फ भारत के गांवों में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी फैल गई | जब चेंदरू ओर टेंबु की अनोखी दोस्ती की कहानी ईसाई मिशनरियों के माध्यम से स्वीडन के ऑस्कर विजेता फिल्म के डायरेक्टर अर्ने एडवर्ड सक्सडोर्फ़ तक पहुंची तो उन्होंने इस दृश्य को पूरी दुनिया को दिखाने का फैसला लिया | एडवर्ड सक्सडोर्फ़ चेंदरू पर फिल्म बनाने का निर्णय लेकर पूरी तैयारी के साथ चेंदरू के गाँव बस्तर के गढ़ बेंगाल पहुँच गए | चेंदरू व उसके गाँव के लोग इन बड़ी- बड़ी मशीने लेकर आए गोरे लोगों को देखकर पहले तो कुछ समझ ही नहीं पाए थे, बाद में जब उन्होंने फिल्म बनाने की अपनी बात बताई तब गाँव वाले लोग बात को समझे |

चेंदरू पर प्रसिद्ध डायरेक्टर अर्ने एडवर्ड सक्सडोर्फ़ ने साल 1957 में स्वीडिश में 'एन दी जंगल सागा' नाम से फिल्म बनाई, जिसे अग्रेंजी में 'दी फ्लूट एण्ड दी एरो' नाम से प्रदर्शित किया गया था | इस फिल्म में 10 साल के चेंदरू ने लगभग एक दर्जन बाघों व 6-7 तेंदुओ के साथ काम किया था | फिल्म निर्माता अर्ने एडवर्ड सक्सडोर्फ़ लगभग दो साल तक फिल्म की शूटिंग के लिए बस्तर में रहे थे | फिल्म की कहानी में चेंदरू का दोस्त गिंजो एक मानवभक्षी तेंदुए को मारते हुए खुद मारा गया जाता है | बाद में चेंदरू की किस तरह बाघों ओर तेंदुओ से दोस्ती हो जाती है, यह दिखाया गया है | इस फिल्म में नायक की भूमिका चेंदरू ने की थी व उसे अपनी इस

भूमिका के लिए रोज मजदूरी के रूप में दो रुपये दिए जाते थे | इस फिल्म में संगीत पंडित रविशंकर ने गाया था जो उस समय संगीत की दुनिया में अपनी पहचान बनाने के लिए जूझ रहे रहे थे | लोग उन्हे चेंदरू के संगीतकार के तौर पर जानने लगे थे | 75 मिनट के समय की यह फिल्म 1957 में निर्मित होने के बाद जब पूरे यूरोप के देशों में सेल्यूलाइड परदे पर चली तो इसे देखने वाले लोग चेंदरू के दीवाने हो गए | चेंदरू रातों-रात पूरे विश्व में बाघ प्रेमी, टाइगर बॉय, टार्जन बॉय के रूप में विख्यात हो गया | इस फिल्म को 1958 के "कान फिल्म फेस्टिवल" में भी प्रदर्शित किया गया था |

चेंदरू ओर उसका दोस्त टेंबु स्त्रोत - (कश्यप, 2022)

स्वीडन में इस फिल्म के दर्शक इस फिल्म के असली नायक को पास से देखना चाहते थे इसलिए फिल्म रिलीज होने के बाद फिल्म निर्माता अर्ने एडवर्ड सक्सडोर्फ़ चेंदरू को भी स्वीडन लेकर गए | स्वीडन में सक्सडोर्फ़ ने चेंदरू को अपने घर पर ही ठहराया | चेंदरू साल भर स्वीडन मे रहा ओर स्वीडन के लोगों ने बाघ के साथ खेलने वाले चेंदरू को पास से देखा | चेंदरू को स्वीडन में वहाँ के लोगों ने प्यार से काला हीरो कहा | जब भी चेंदरू बाहर जाता तो लोग इस असली हीरो को हाथ से छू कर देखने के लिए बड़े उत्सुक रहते थे | चेंदरू की स्वीडन के अलग अलग शहरो में साल भर प्रेस कॉन्फ्रेंस हुई थी जिसमे एक दुभाषिया साथ होता था जो दर्शकों के सवाल जवाब

समझाता था | साल भर चेंदरू स्वीडन में एक स्टार की तरह रहा | सक्सडोर्फ़ की पत्नी जो की एक अच्छी फोटोग्राफर थी चेंदरू को बहुत पसंद करती थी | इसी लिए उसने फिल्म की शूटिंग के दौरान चेंदरू की कई तस्वीरे खींची ओर एक किताब "दी बॉय एण्ड दी टाइगर" नाम से प्रकाशित की | साल भर बाद चेंदरू समुद्र के रास्ते वापिस अपने वतन भारत लौट आया | स्वीडन से वापिस समुन्द्री रास्ते से लौटते समय वह मुंबई पहुचा था | उन दिनों भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू थे | पंडित नेहरू चेंदरू की लोकप्रियता के किस्से पहले ही इधर उधर से सुन चुके थे | चेंदरू ने मुंबई में नेहरू से मुलाकात की | पंडित नेहरू ने चेंदरू को पढ़ने को कहा व अच्छी नोकरी देने का वादा किया था | मुंबई से चेंदरू अपने गाँव चला आया तथा यहाँ वह घर के कार्यों की वजह से पढ़ लिख नहीं पाया | | जब चेंदरू विदेश की चकाचोंध से निकलकर वापिस अपने गाँव गढ़बेंगाल लौटा तब उसका सामना फिर असल जिंदगी से हुआ | कुछ महीनों तक विदेश में देखी हुई शहरी तड़क भड़क की जिंदगी उसे बेचैन करने लगी, वो जिंदगी उसे आकर्षित करती थी | गाँव जाने के चंद रोज बाद ही उसका दोस्त टेंबु भी इस दुनिया से चल बसा था, इससे चेंदरू का जीवन उदासी ओर एकांतता से भर गया था | अपने जीवन की इसी उदासी ओर एकांतता को समाप्त करने के लिए चेंदरू ने बस्तर की मुरिया आदिवासी परंपरा के मुताबित घोंटूल में अपने लिए पत्नी खोज ली | घोंटूल मुरिया आदिवासी समुदाय के युवाओं का युवा गृह है जहां सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों को संचालित करने की जानकारी युवाओं को दिया जाता है | घोंटूल में मुरिया युवक युवतियाँ सामाजिक जीवन का पाठ सीखने के साथ साथ अपने लिए जीवन साथी का चुनाव भी करते है | शादी के बाद की कहानी चेंदरू के जीवन की गुमनामी की कहानी है | चेंदरू इसके बाद 50 वर्ष तक अपने कच्चे घर में गरीबी की अवस्था में जीवन का गुजर बसर करता रहा | वह फिल्म निर्माता सक्सडोर्फ़ का भी इंतजार करता रहा लेकिन 2001 में उनकी मृत्यु हो जाने से उसकी अंतिम उम्मीद भी खत्म हो गई थी | इसी बीच जाने माने डाक्यूमेंटरी निर्माता प्रमोद कुमार जब 40 साल बाद गढ़बेंगाल पहुंचे तो उन्होंने वहाँ "दी जंगल सागा" फिल्म प्रोजेक्टर पर उस गाँव के लोगों को दिखाई थी | गाँव के लोगो ने ये फिल्म पहली बार देखी थी लेकिन उस दिन चेंदरू ने ये फिल्म नहीं देखी थी | फिल्म दिखाए जाने के समय वो कही दूर बैठकर फुट फुट कर रो रहा था | चेंदरू के पास विदेश में मिले हुए दूरबीन, चश्मा ओर टोपी जैसी चीजे थी, जिन्हे बाद में जगदलपुर का एक ठेकेदार धोखे से लेकर चला गया था | अब चेंदरू के पास सिवाय सक्सडोर्फ़ की पत्नी एस्टरीड सक्सडोर्फ़ की लिखी किताब "दी बॉय एण्ड दी टाइगर" जिसमे चेंदरू के साथ उसके दोस्त टेंबु की तस्वीरे थी के अलावा कुछ नहीं बचा था |

चेंदरू को इसी गुमनामी ओर गरीबी में रहते हुए 2013 मे पैरालिसिस अटैक हुआ | इस दौरान कुछ लोगों ने उसे आर्थिक मदद भी की थी लेकिन यह मदद बहुत काम थी | अब काफी देर हो चुकी थी, चेंदरू को बचाया नहीं जा सका | चेंदरू ने 18 सितंबर 2013 को बीमारी से जूझते हुए गुमनामी में इस दुनिया को अलविदा कहा | गाँव के लोगों ने मुरिया परंपरा के अनुसार चेंदरू को नाचते गाते हुए इस दुनिया से विदाई दी | सबसे बड़ी विडंबना की बात तो यह थी की 60 वर्ष पहले दुनियाभर में जंगल के प्राणियों व बाघों से दोस्ती का पैगाम देने वाले चेंदरू की मौत पर किसी ने भी उसे सार्वजनिक रूप से श्रदांजली देने तक की जरूरत नहीं समझी | इस दुनिया से जाने के बाद तो लोग चेंदरू को हमेशा के लिए भूल ही गए | चेंदरू राम मंडावी की सुध सरकार ने उनकी मौत के 3 साल बाद ली, जब नया रायपुर की जंगल सफारी में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बाघ के साथ खेलते चेंदरू की एक बड़ी आदमकद प्रतिमा का उद्घाटन किया | इस जंगल सफारी के लोगों के बीचों बीच चेंदरू को अपने दोस्त टेंबु के साथ दिखाया गया है | इसके पीछे सरकार का यह उद्देश्य है की चेंदरू का इतिहास जीवित रहे व मानव ओर वन्य प्राणी के बीच संबंध के प्रतीक चेंदरू ओर टेंबु को दुनिया फिर से जान सके |

संदर्भ ग्रंथ :-

1. DynamicBastar. (2022, 09 25). *बस्तर का पहला भारतीय हालीवुड हीरो "द टाईगर बाय चेंदरू" - The Tiger Boy Chendru*. Retrieved from https://dynamicbastar.com/2020/10/the-tiger-boy-chendru/html

2. George, C. D. (2022 , 12 18). *jesuitresource*. Retrieved from jesuitresource: https://www.xavier.edu/jesuitresource/online-resources/quote-archive1/native-american1

3. JOHN, J. (2013, 9 20). *The Times of India*. Retrieved from Bastar's 'Tiger boy' passes away; had played lead role in Os ..: https://timesofindia.indiatimes.com/city/raipur/Bastars-Tiger-boy-passes-away-had-played-lead-role-in-Oscar-winning-movie/articleshow/22795504.cms

4. Reporter, S. (2022, 9 28). *The Pioneer*. Retrieved from Chendru the 'Tiger Boy' is CTB memento: https://www.dailypioneer.com/2022/state-editions/chendru-the----tiger-boy----is-ctb-memento.html

5. Siyanshouts. (2018, 2 9). *The Class Teacher Talks*. Retrieved from Chendru; The Tiger Boy: https://upen25.blogspot.com/2018/09/Chendruthetigerboy.html

6. Sucksdorff, A. B. (1960). Chendru: The Boy and the Tiger. In W. S. Astrid Bergman Sucksdorff, *Chendru: The Boy and the Tiger.* Harcourt: https://www.goodreads.com/book/show/5882144-chendru.

7. TV, S. (Producer), & Badal, R. (Director). (2013). *Special Report - Chendru Mandavi the 'Tiger Boy'* [Motion Picture]. India. Retrieved from https://www.youtube.com/watch?v=5_92wePPmT8

8. कश्यप, म. (2022, September 19). *चेंदरू - द टाइगर बॉय.* (म. कश्यप, Editor, म. कश्यप, Producer, & नव बस्तर) Retrieved DECEMBER 7, 2022, from नव बस्तर : https://www.pioneerbastar.com/2022/09/The%20Tiger%20Boy%20-%20Chendaru%20Mandavi.html